भाषा विज्ञान विज्ञान है या कला —

भाषा विज्ञान का शाब्दिक अर्थ है 'भाषा का विज्ञान'। 'विज्ञान' का सामान्य अर्थ ऐसे विशुद्ध ज्ञान से लिया जाता है जो देश एवं काल की दृष्टि से अपरिवर्तनशील हो। विज्ञान का वास्तविक अर्थ है किसी भी विषय का व्यवस्थित ज्ञान। इस दृष्टि से भाषाविज्ञान भाषा का 'व्यवस्थित ज्ञान' है। भाषा का विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन करना एवं उसे व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करना ही भाषा-विज्ञान का कार्य है। भाषा विज्ञान भाषा-सामग्री का विवेचन-विश्लेषण करता है तथा भाषा की रचना तथा उसके प्रयोग से सम्बन्धित कुछ सामान्य नियमों की रचना करता है।

विज्ञान शब्द का मूल अर्थ 'विशेष ज्ञान' है। उपनिषदों में इसका प्रयोग 'ब्रह्मविद्या' के लिए हुआ है। आज सामान्य प्रयोग में 'शास्त्र' में और 'विज्ञान' में कोई भेद प्रायः किया नहीं जाता। मूलतः शास्त्र और विज्ञान में अन्तर है। 'विज्ञान' तो विशेष ज्ञान है और 'शास्त्र' 'शासन करने वाला है' अर्थात वह यह बतलाता है कि क्या करणीय है और क्या अकरणीय। अर्थशास्त्र कामशास्त्र, धर्मशास्त्र के प्राचीन प्रयोग इसी ओर संकेत करते हैं। इस अर्थ में व्याकरण को शास्त्र कह सकते हैं किन्तु इस अर्थ की दृष्टि से भाषाविज्ञान को शास्त्र नहीं कह सकते। अब अर्थ भुला दिया गया है और 'विज्ञान' तथा शास्त्र पर्याय से हो गये हैं इसीलिए राजनीतिविज्ञान तथा राजनीतिशास्त्र, भौतिक विज्ञान और भौतिक शास्त्र, समाजविज्ञान और समाजशास्त्र एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

प्रश्न यह है कि भाषाविज्ञान किस सीमा तक विज्ञान है। गणित, भौतिक और रसायन जिस अर्थ में विज्ञान है ठीक उसी अर्थ में मानवविज्ञान, राजनीतिविज्ञान, समाजविज्ञान आदि विज्ञान नहीं हैं। विज्ञान में प्रायः विकल्प नहीं होता और उसके सत्य काफी सीमा तक देशकाल से परे अर्थात सार्वत्रिक और सार्वकालिक होते हैं। वे बातें गणित या भौतिकी पर जितनी लागू होती हैं, उतनी राजनीतिविज्ञान आदि पर नहीं, फिर भी विज्ञान कहे जाते हैं। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि भाषाविज्ञान विज्ञान तो है, किन्तु उस सीमा तक नहीं जितना कि गणित आदि। यों इसमें सन्देह नहीं कि दिनो दिन यह विकसित तथा अधिक वैज्ञानिक होता जा रहा है।

अध्ययन के विषयों को विज्ञान और कला दो वर्गों में बांटा जा रहा है। बी० ए०, एम० ए० या आर्ट्स फैकल्टी में (आर्ट्स) कला का यही अर्थ है। वस्तुतः ज्ञान की दो

इन दो शाखाओं के कारण ही यह प्रश्न उठा था कि भाषाविज्ञान 'विज्ञान' है या 'कला'। यह बात ध्यान देने की है कि इस प्रश्न में 'कला' का अर्थ 'ललित या उपयोगी' कला नहीं है, जैसे कि कुछ लोग ले लेते हैं। इस प्रकार भाषा-विज्ञान 'ललित कला' या 'उपयोगी कला' में 'कला' का जो अर्थ है, उस अर्थ में 'कला' नहीं है। किन्तु बी० ए० आदि में कला का जो अर्थ है उस दृष्टि से कला है क्योंकि मनोविज्ञान अर्थशास्त्र, राजनीति आदि ऐसे विषय जो रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र आदि की निश्चित विज्ञान (Exact Science) नहीं है। कला के ही अन्तर्गत माने जाते हैं। भाषाविज्ञान भी लगभग इन्हीं की कोटि का है। इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्य है कि इस रूप में 'कला' का अर्थ या क्षेत्र बहुत निश्चित नहीं है। गणित को इस संदर्भ में कला में रखते भी हैं और नहीं भी रखते हैं। कुछ विश्वविद्यालयों में बी० एससी० पास व्यक्ति गणित में मास्टर की ~~डिग्री~~ डिग्री ले तो उसे एम० एस-सी की उपाधि मिलती है और बी० ए० पास व्यक्ति डिग्री ले तो उसे एम० ए० की उपाधि मिलती है। यही नहीं यूरोप के कुछ विश्वविद्यालय सभी विषयों को सांइस मानकर सांइस की डिग्री देते हैं तथा कुछ परम्परागत रूप से सभी में आर्ट की।

आजकल अध्ययन के विषयों को मोटे रूप से तीन वर्गों में रखने की परम्परा चल पड़ी है। [क] प्राकृतिक विज्ञान — जैसे- भौतिकी, रसायनशास्त्र आदि। [ख] सामाजिक विज्ञान — जैसे- समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि। [ग] मानविकी (Humanities) जैसे- साहित्य, संगीतशास्त्र, चित्रकला आदि। यदि भाषा-विज्ञान को इनमें रखने की बात उठाई जाय तो वह समवेत रूप से सामाजिक विज्ञान के निकट पड़ेगा। यदि उसके विभिन्न विभागों की ओर दृष्टि दौड़ाए तो उसकी ध्वनिविज्ञान शाखा प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में पड़ता है। तो उसकी शैली विज्ञान शाखा एक सीमा तक मानविकी में।

— :XOX: —